दूसरा देवदास (CH- 16) Detailed Summary || Class 12 Hindi अंतरा

पाठ की मूल संवेदनाः –

- ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्व और गरिमा को ऊपर उठाती है। कहानी से यह सिद्ध होता है कि प्रेम को किसी निश्चित व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह स्वतः ही हो जाता है।
- 21वीं सदी में विलासिता की संस्कृति ने प्रेम के स्वरूप को अधिकतर उच्छृंखल बना दिया है। ऐसे में यह कहानी प्रेम के वास्तविक स्वरूप को रेखांकित करती है और दूसरी ओर युवा मन की संवेदना, भावना और कल्पना को भी प्रस्तुत करती है।

दूसरा देवदास – पाठ का सार

हर की पौड़ी का मनोहारी दृश्यः –

शाम को हर की पौड़ी में गंगा आरती का रंग निराला होता है। भक्तों की भीड़ अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए फूल, प्रसाद आदि की खरीदारी करती है। उस समय पण्डे और गोताखोर सक्रिय हो जाते हैं। चारों ओर पूजा का माहौल है, पांच मंजिला नीलांजलि में एक सहस्त्र दीपक जल जाते हैं और आरती शुरू हो जाती है। प्रार्थना के दीये लेकर फूल के छोटे-छोटे दोने गंगा की लहरों पर लहराते हुए आगे बढ़ते हैं। चंदन और धूप की सुगंध पूरे वातावरण में फैल जाती है और भक्त संतोष से भर जाते हैं।

गंगा पुत्रों का जीवन परिवेशः –

'गंगा पुत्र' वे गोताखोर हैं जो गंगा में डुबकी लगाते हैं और भक्तों द्वारा छोड़े गए धन को इकट्ठा करके अपनी आजीविका कमाते हैं। इनका जीवन गंगा पर निर्भर करता है, यह रेजगारी इकट्ठा कर कुशघाट पर अपनी बहन या पत्नी को दे देते हैं, जो इन्हें बेचकर नोट कमाती हैं। कई बार उनके साथ दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं, लेकिन परवाह किए बिना वे अपने काम में लगे रहते हैं।

दूसरा देवदास में नायक नायिका का प्रथम परिचयः –

कहानी का नायक 'संभव' है और नायिका 'पारो'। संभव कुछ दिनों के लिए नानी के घर आया है। वह नास्तिक होते हुए भी माता-पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आया है। नायक और नायिका का प्रथम परिचय गंगा तट पर स्थित मंदिर में होता है। मंदिर में धन चढ़ाने के बाद संभव ने कलावा को बांधने के लिए हाथ बढ़ाया। तभी एक नाजुक कलाई भी कलावा को बांधने के लिए आगे बढ़ती है। संभव गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की को देखता है। पुजारी दोनों को एक जोड़े के रूप में मानते हैं और उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

सुखी रहो फलो – फूलो, जब भी आओ, साथ ही आना। गंगा मैया मनोकामना पूरी करे, लड़की घबराहट में छिटककर दूर हो गई और तेजी से चली गई। इस प्रकार दोनों के बीच पहला आकर्षण हर की पौड़ी में पैदा होता है, जो लगातार घटने वाली घटनाओं के क्रम से प्यार में बदल जाता है।

इसे पहली नजर का प्यार कहा जा सकता है।

संभव की मनः स्थिति (लड़की से मिलने के पश्चात)ः –

उस छोटी सी मुलाकात ने संभव के मन में कल्पना और सपनों के पंख लगा दिए, उसमें फिर मिलने की बेचैनी पैदा हो गई। ऐसा अजीब सा अहसास था कि बेचैनी के साथ-साथ सुख भी दे रहा था। मन ही मन उसके रूप को याद करके वह उससे बात करने के बारे में सोचने लगा। ऐसा आकर्षण उसे पहली बार महसूस हुआ।

लड़की का आंख मूंदकर पूजा करना, माथे पर गीले बालों की लटें, कुर्ते को छूता गुलाबी घेरा और उसका कोमल स्वर।

संभव पूरी रात इन्हीं ख्यालों में खोया रहा। अचानक उसे बिंदिया और श्रृंगार के अन्य साधन पसंद आने लगे और अचानक मांग में सितारों को भरने जैसे गाने उसे पसंद आने लगे।

मनसा देवी पर मनोकामना की गांठः –

सभी भक्त मनसा देवी पर अपनी मनोकामना के लिए लाल और पीले रंग के धागे बांध रहे थे। संभव ने भी पूरी श्रद्धा के साथ मनोकामना की गांठ लगाई। जिसमें उस लड़की से दोबारा मिलने की ख्वाहिश थी। अब पहला आकर्षण प्यार में बदल चुका था। वहीं पारो ने भी इसी उम्मीद के साथ मनोकामना की गांठ लगाई। दोनों एक दूसरे से मिलने के लिए बेताब थे, अचानक दोनों मंदिर के बाहर फिर से मिले।

उन दोनों ने अपनी-अपनी ख्वाहिशों की गांठ के इतने जल्दी परिणाम की उम्मीद नहीं की थी।

पारो की मनोदशाः –

- पारो की मनोदशा भी संभव से अलग नहीं था, वह खुद भी उसके आकर्षण में डूबी हुई थी। युवा मन का एकतरफा प्रेम केवल एक झलक पाने के लिए व्याकुल था।
- जब संभव के रूप में मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गांठ का परिणाम आया, तो वह आश्चर्य और मिश्रित खुशी में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा शर्म से गुलाबी हो रहा था क्योंकि वह भी इसी का इंतजार कर रही थी।
- उन्होंने भगवान को धन्यवाद दिया और अपने मन में एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना की पूर्ति के साथ ही देवी में विश्वास और संभव के लिए प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थायी हो गया।

https://www.evidyarthi.in/